खण्ड: 4, अंक: 3

मार्च 2021

# संश्लेषण

## डी सी आर सी मासिक पत्रिका

# राष्ट्रीय दल एवं क्षेत्रीय राजनीति परिवर्तनीय परिदृश्य

डी.सी.आर.सी.

विकासशील राज्य शोध केंद्र

दिल्ली विश्वविद्यालय

**मुख्य संपादक**
प्रो. सुनील के चौधरी

**संपादक**
डा. रमेश भारद्वाज
नागेन्द्र कुमार
शरद कुमार यादव

**संपादकीय मंडल**
डा. अभिषेक नाथ
कुँवर प्रांजल सिंह
आशीष कुमार शुक्ल

© डीसीआरसी 2021

रूपाकंन एवं संयोजनः आर. किशोर

# संश्लेषण

## राष्ट्रीय दल एवं क्षेत्रीय राजनीतिः परिवर्तनीय परिप्रेक्ष्य

अनुक्रमिका


संपादकीय i-ii

1. भारत में दलीय राजनीतिः एक दलीय प्रभुत्व प्रणाली का पुनरुत्थान 1–4

– सुशांत यादव

2. राष्ट्रीय चुनाव व क्षेत्रीय दलः एक तुलनात्मक अध्ययन – सृष्टि 5–9

3. राष्ट्रीय दल एवं क्षेत्रीय राजनीतिः परिवर्तनीय परिप्रेक्ष्य – डॉ. अमित अग्रवाल 10–14

4. राष्ट्रीय दलों का क्षेत्रीय राजनीति में योगदान एवं चुनौतियां 15–18

– प्रियंका बारगल

– हितेन्द्र बारगल

5. राष्ट्रीय राजनीति एवं क्षेत्रीय दलः एक परिवर्तनीय परिदृश्य 19–23

– राम किशोर

6. राष्ट्रीय राजनीति में भाजपा की लोकप्रियता एवं क्षेत्रीय दलों के वर्चस्व का पतन 24–29

– काजल

# सम्पादकीय

विकासशील राज्य शोध केंद्र, दिल्ली विश्वविद्यालय की हिंदी मासिक पत्रिका संश्लेषण के माध्यम से समसामयिक विषयों पर लेखों का यह सामूहिक प्रकटीकरण विद्यार्थियों व शोधार्थियों की शोध के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। बौद्धिक अभिव्यक्ति की निरंतरता में संश्लेषण का यह 32वां अंक आप सभी के समक्ष उपस्थित है।

भारतीय चुनावी राजनीति में गठबंधन युग राजनीतिक दलों की दृष्टि से संक्रमणकारी युग के रूप में व्याख्यायित किया जा सकता है। इस युग में राजनीतिक दलों की वैचारिक प्रतिबद्धताओं तथा उनके स्वरूप में निरंतर परिवर्तनीयता इस संक्रमण की साक्षी है। राष्ट्रीय दलों की स्वयं को अखिल भारतीय दल के रूप में स्थापित करने की प्रबल इच्छा एवं क्षेत्रीय दलों में राष्ट्रीय दल की सूची में सम्मिलित होने की आकांक्षा भारत में दलीय राजनीति को निरंतर परिवर्तित करती रही है जिसे एक–दलीय प्रभुत्व, द्वि–दलीय एवं बहु–दलीय प्रणाली के रूप में समझा जाता है।

1980 के दशक ने भारतीय चुनावी राजनीति में जिस कथानक को जन्म दिया है, उसमें क्षेत्रीय राजनीति की परिवर्तनीयता सबसे महत्वपूर्ण है। भारत में विभिन्न क्षेत्रीय दलों के उभार ने संबंधित क्षेत्रों में ना केवल राष्ट्रीय दलों की उपस्थिति के समक्ष कठिन चुनौती प्रस्तुत की, अपितु इन्हें उन क्षेत्रों में सत्ता से लगभग बहिष्कृत भी कर दिया। ऐसे में राष्ट्रीय दलों ने भी क्षेत्रीय दलों के महत्व को स्वीकार करते हुए पहले उन्हें राष्ट्रीय राजनीति में अपना सहभागी बनाया, तत्पश्चात संबंधित क्षेत्रों में चुनावी राजनीति में स्वयं उनके सहभागी भी बने। आज स्थिति यह है कि विभिन्न राज्य विधानसभा चुनावों में विभिन्न राष्ट्रीय दल, जिसमें वह दल भी सम्मिलित हैं जो कभी भारतीय राजनीति में स्वयं एक व्यवस्था के रूप में परिभाषित किया जाता था, स्वयं को दोयम स्थिति में रखकर भी अपने अस्तित्व को बचाए रखने में प्रयासरत हैं।

संश्लेषण का प्रस्तुत अंक 'राष्ट्रीय दल एवं क्षेत्रीय राजनीतिः एक परिवर्तनीय परिप्रेक्ष्य' भारतीय राजनीति की इसी परिवर्तनीयता को समझने व विश्लेषित करने का एक बौद्धिक प्रयास है। संपादक मंडल द्वारा चयनित विभिन्न लेखों में राष्ट्रीय दलों की क्षेत्रीय स्थिति एवं उनके भविष्य का एक चित्र खींचने का प्रयास किया गया। लेखकों के स्वतंत्र चिंतन को परिलक्षित करते ये समस्त लेख भारतीय चुनावी राजनीति तथा दलीय प्रणाली का सारगर्भित विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं।

आप सभी सुधी लेखकों व पाठकों द्वारा किए जाने वाले गंभीर लेखन एवं आपसे प्राप्त होने वाली महत्वपूर्ण प्रतिक्रियाओं के आधार पर हम संश्लेषण को और अधिक गुणात्मक बनाने प्रतिबद्ध हैं। आपके निरंतर सहयोग के लिए आप सभी का धन्यवाद।

संपादक मंडल

बुधवार, 14 अप्रैल 2021

1

# भारत में दलीय राजनीतिः एक दलीय प्रभुत्व प्रणाली का पुनरुत्थान

**सुशांत यादव**

अतिथि प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान, NCWEB, दिल्ली विश्वविद्यालय

भारतीय संसद के निम्न सदन लोकसभा में पुूर्व के तीन दशक के दौरान मई 2014 में, पहली बार पूर्ण बहुमत प्राप्त कर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने गठबंधन की राजनीति को समाप्त करते हुए सरकार का गठन किया। प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेंद्र मोदी की ने में भाजपा की इस चुनावी विजय ने राजनीति वैज्ञानिकों और चुनावी विश्लेषकों के मध्य एक नई वाद–विवाद को जन्म दिया कि क्या देश की चुनावी राजनीति में अब परिवर्तन की लहर शुरू हो गई? भारतीय दलीय राजनीति 1989 में राजीव गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस की सरकार गिरने के पश्चात् से लेकर 2014 तक मनमोहन सिंह की नेतृत्व वाली संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग) की सरकार तक गठबंधन की राजनीति का पर्याय बन चुकी थी। राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस पार्टी के दशकों प्रभुत्व के पश्चात् तीन शताब्दी तक कोई भी दल इतना सुदृढ़ नहीं थी कि वह अपने साम्थर्य पर संसद में पूर्ण बहुमत प्राप्त कर सके, कभी चुनावों के पर्व तो कभी चुनावों के पश्चात् दर्जनों सहयोगी दलों पर निर्भर होकर एक कार्यकारी गठबंधन का निर्माण करके सरकार का गठन किया जाता था।

परंतु 2014 और 2019 के लोकसभा चुनावों और इस दौरान विभिन्न राज्यों में सम्पन्न हुए विधानसभा के चुनावों में भाजपा को सफलता ने इस बारे में एक नई वाद–विवाद के लिए प्रेरित किया कि, क्या भारतीय दलीय व्यवस्था ने बहुध्रुवीयता, विखंडन और गठबंधन के युग को अस्वीकृत हुए पुनः 'एक दलीय प्रभुत्व प्रणाली' का रुख़ कर लिया? जिसमें केंद्रीय ध्रुव की भूमिका अर्थात् एक दलीय प्रभुत्व में गठबंधन सरकारों के दौर से पुूर्व जो स्थिति कांग्रेस के पास थी अब वह भाजपा ने ग्रहण कर ली। यद्यपि राजनीति वैज्ञानिक इस विषय पर अपने आँकलन को लेकर एकमत नहीं हैं। कुछ विद्वानों ने तो 2014 के चुनावी निर्णय को गम्भीरता से ही नहीं लिया। एडम ज़ेगफेल्ड ने लिखा कि, ''देश के प्रमुख राजनीतिक दलों द्वारा जीते गए वोट शेयर के परिप्रेक्ष्य से, समाचारों की सुर्खियों में आने के बावजूद कुछ नहीं परिवर्तित हुआ है।'' रेखा दिवाकर बताती हैं कि, यद्यपि कांग्रेस में गिरावट आई है और यह गिरावट निरंतर जारी है वहीं

भाजपा ने हाल के कई राज्य विधानसभा चुनाव जीते हैं, परंतु अभी यह निष्कर्ष निकालना समय से पहले होगा कि भारतीय दलीय प्रणाली भाजपा के प्रभुत्व वाले दायरे में स्थानांतरित हो गई है।" एक अन्य विद्वान, ओलिवर हीथ ने 2014 के चुनाव परिमाण पश्चात् लिखा कि, "चुनावी परिवर्तन की यह प्रक्रिया कितनी टिकाऊ रहेगी इस संदर्भ में, भाजपा के पास आशावाद और सावधानी दोनों हैं। निर्वाचन क्षेत्र स्तर पर भारतीय चुनावों की तरलता और अस्थिरता को देखते हुए, अभी विशेष रूप से प्रत्यक्ष रूपांतरण स्थिर होने की संभावना नहीं है।"

कुछ अन्य विद्वान यह मानने में संकोच नहीं कर रहे हैं कि भारतीय राजनीति एक नई दलीय प्रणाली के उदय का साक्ष्य बन रहा है। ई. श्रीधरन लिखते हैं कि, "परिणाम नाटकीय थे, संभवतः युगीन भी। पिछली तीन दशक के चुनावी प्रतिरूप में एक व्यापक परिवर्तन आया है और विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र में अब एक नइ दलीय प्रणाली दृष्टिगत हो रही है जिसका नेतृत्व एक नवीन दल कर रहा है।" इसी प्रकार, प्रदीप छिब्बर और राहुल वर्मा ने कहा कि अपनी ऐतिहासिक जीत के साथ, 'भाजपा ने स्पष्ट रूप से कांग्रेस के सिस्टम–डिफाइनिंग पार्टी के स्वरूप को परिवर्तित कर दिया है जो संभवतः भारत में 'चुनावी संरेखण और पुनः संरेखण का केंद्र बिंदु' बन जाएगा।

कुछ अन्य विद्वानों नें इस राजनीतिक परिवर्तन को संज्ञान में तो लिया, किंतु सैद्धांतिक बिंदु के प्रकाश में सुदृढ दावे करने के लिए तैयार नहीं हैं। उदाहरण के लिए, मिलान वैष्णव और डेनिएल स्मॉगार्ड ने 2014 के परिणामों के अपने आकलन का निष्कर्ष निकाला है कि यदि आगामी चुनावों में भी यही रुझान जारी रहता है तो, भारत पच्चीस वर्ष की अपनी पुरानी चुनावी राजनीति की पुस्तक को अच्छी तरह से बंद कर एक नए युग में स्थानांतरित हो सकता है।" कुछ इस प्रकार ही, लुईस टिलिन ने टिप्पणी की है कि, उपस्थित साक्ष्य कुछ हद तक समान है कि क्या 2014 के चुनाव लंबी अवधि के चुनावी पैटर्न में एक प्रस्थान या भाजपा के पीछे एक नए सामाजिक ब्लॉक के समेकन को चिह्नित करते हैं।"

इन विशेषज्ञों के आकलन में विचलन के कारणों को आसानी से समझा जा सकता है। इसमें पहला कारण देखें तो चुनाव परिणामों के आधार पर निश्चित निर्णयों का प्रतिपादन करने की कठिनाई के अतिरिक्त, 2014 में भाजपा की विजय भारतीय संघ के अपेक्षाकृत कम राज्यों में वहाँ की लगभग सभी लोकसभा सीटों की विजय पर निर्भर थी अर्थात् 2014 में भाजपा के 75 प्रतिशत सांसद देश के उत्तर, पश्चिम और मध्य क्षेत्रों में केवल आठ राज्यों से निर्वाचित होकर आए थे। दूसरा कारण यह कि भाजपा ने लोकसभा में तो बहुमत प्राप्त किया, परंतु यह भारतीय संसद के ऊपरी सदन अर्थात् राज्यसभा में बहुमत के समीप नहीं थी अर्थात् राज्य विधानसभाओं

में अभी भी ग़ैर–भाजपा की सरकारें उपस्थित थीं। यह महत्वपूर्ण है, क्योंकि कानून बनने के लिए दोनों सदनों द्वारा अपनी सहमति प्रदान करना अनिवार्य है। इस प्रकार भाजपा की पहुंच राज्यों के स्तर पर सीमित थी, जो कई अर्थो में रोजमर्रा के शासन के सबसे महत्वपूर्ण स्थल हैं। 2014 के चुनाव से पहले भाजपा की उनतीस राज्यों में से केवल पांच राज्यों में अपनी सरकार थी। जो 2012 में अपनी सात राज्यों में प्राप्त सरकार के पिछले उच्च स्तर से कम है।

2019 के आम चुनाव परिणामों के उपरांत, जो भारत में राज्यों के स्तर पर महत्वपूर्ण राजनीतिक परिवर्तनों को अंजाम देते हैं, अधिक असमान निर्णय के लिए अनुभवजन्य समर्थन है। वास्तव में अब उपलब्ध साक्ष्य इस दिशा में इंगित करता है कि 2014 का चुनाव परिणाम दलीय राजनीति में 1989 से चली आ रही गठबंधन की राजनीति में महज़ एक पथ विचलन नहीं था वरन इसके स्थान पर यह एक नए युग की शुरुआत की पहली आहट थी। भारत अब एक नई दलीय प्रणाली की शुरुआत कर रहा है, जो राजनीतिक सिद्धांत की एक अनूठी अभिव्यंजना पर आधारित है और जिसे पूर्व में हम कांग्रेस प्रणाली के तौर पर देख चुके हैं परंतु 1989 में शुरू गठबंधन के दौर के साथ इसमें एक स्पष्ट विराम दिखता है। 2019 के आम चुनाव में भाजपा पुनः अजेय रही, पार्टी ने लोकसभा में निरंतर दूसरी बार बहुमत प्राप्त किया। निरंतर दूसरी बार पूर्ण बहुमत प्राप्त करने वाली यह भारतीय राजनीति में कांग्रेस के पश्चात् दूसरी पार्टी बनी। ऐसा कारनामा पिछली बार 1980 और 1984 में कांग्रेस पार्टी ने किया था। जबकि अधिकांश राजनीतिक विश्लेषकों ने भाजपा से सापेक्ष सहजता के साथ सत्ता में लौटने की आाशा की, बहुत कम लोगों ने जीत के परिमाण का अनुमान लगाया।

भाजपा ने लोकसभा में कुल 543 सीटा में से 303 सीटें जीतीं, जबकि उसके राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) ने कुल 353 सीटें जीत लीं। चुनावी विजय की इस दौड़ में भाजपा ने 2014 के अपने ऐतिहासिक प्रदर्शन जिसमें उसने 282 सीटें अर्जित की जबकि उसके गठबंधन ने 336 सीटें प्राप्त की थी, से भी श्रेष्ठ प्रदर्शन किया। इसके विपरीत मुख्य विपक्षी पार्टी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लिए इस चुनावी परिणाम नें एक और निराशा उत्पन्न की, जिसमें उसनें 2014 की अपनी कुल सीटों की तुलना में मात्र 8 सीटों की बढ़ोत्तरी करते हुए 52 सीटों पर विजय प्राप्त की और एक बार पुनः लोकसभा में 'विपक्ष के नेता' की भूमिका से वंचित रह गई।

♦♦♦♦♦

- संदर्भ सूची


- अटल, योगेश और चौधरी, सुनील कुमार (2015). राइट टर्न इन इंडियन पोलिटीः मोदी ऑन बीजेपी'ज चौरिओट. नई दिल्लीः हर आनंद पब्लिकेशन
- वार्ष्णेय, आशुतोष (2018). अधूरी जीतरूभारत का अप्रत्याशित लोकतंत्र. नई दिल्लीरू ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रस
- नारायण, बद्रो (2021). रिपब्लिक ऑफ हिंदुत्वः हाउ द संघ इज रीशेपिंग इंडियन डेमोक्रसी. नई दिल्लीः पेंग्विन विकिलीक्स
- दुबे, अभय कुमार (2020). हिंदू एकता बनाम ज्ञान की राजनीति. नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन

# 2

## राष्ट्रीय चुनाव व क्षेत्रीय दलः एक तुलनात्मक अध्ययन

सृष्टि
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

समकालीन समय में, भारत की राष्ट्रीय राजनीति में एक अत्यधिक खंडित बहुदलीय व्यवस्था प्रदर्शित हो रही है। दलों के विखंडन के परिणामस्वरूप राष्ट्रीय सरकार बनाने के लिए राजनीतिक दलों के प्रायः गठबंधन हुए है। इसका अर्थ यह है कि पूर्व में,कम राष्ट्रीय मत शेयर व केंद्रित, राजनीतिक शक्ति के क्षेत्रीय आधार वाले दलों की राष्ट्रीय सरकार के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका थी, क्योंकि वें एक गठबंधन या दूसरे को चुनकर किंगमेकर की भूमिका निभा सकते थे, परंतु अब समय परिवर्तित हो रहा है।

2019 के राष्ट्रीय चुनाव में व्यापक प्रदर्शन के पश्चात, एक प्रमुख भारतीय जनता पार्टी ने भारत के नए भागों में स्वयं को स्थापित करना प्रारंभ कर दिया था और भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों के किंगमेकर होने के मानक आख्यान को एक चुनौती दी है। 2014 में भाजपा ने 543 में से 282 सीटों पर विजय प्राप्त की थी, 2019 में यह संख्या बढ़कर 303 सीटों पर पहुँच गई। निरंतर चुनावों में, भाजपा ने सरकार में बहुमत बनाया है। इसने भाजपा को न केवल चुनावी दृष्टि से अपितु सांस्कृतिक दृष्टि से भी सम्पूर्ण भारत को अपने पदचिन्हों पर चलने की स्वीकृति प्रदान की है। अपने पारंपरिक क्षेत्रीयों आधारों से परे भाजपा का विस्तार भारत में क्षेत्रीय दलों के लिए क्या दर्शाता है? भारत में दलीय व्यवस्था में परिवर्तन के साथ केंद्र व राज्य के संबंधों पर पुनः विचार–विमर्श कैसे हो रहा है?

सर्वप्रथम यह ध्यान मे रखना महत्वपूर्ण है कि कई वर्षों से क्षेत्रीय दलों ने एक महत्वपूर्ण वोट शेयर को प्राप्त किया है। 1984 में भी, कॉंग्रेस के चुनावी प्रभुत्व के दौरान, कॉंग्रेसस व भाजपा के अतिरिक्त अंतः क्षेत्रीय दलों को जाने वाले राष्ट्रीय मतों का भाग 40 प्रतिशत अधिक था।

इस अंश में, यह स्पष्ट है कि भाजपा के चुनावी प्रदर्शन व नरेंद्र मोदी जी की लोकप्रियता ने क्षेत्रीय दलों की स्थिति को निम्न कर दिया है। केंद्र में भाजपा की अविरल शक्ति ने शासन के विषयों में सत्ता के अधिक केन्द्रीकरण की अनुमति प्रदान की है। केन्द्रीकरण भाजपा की

"आधिपत्य" परियोजना के केंद्र में है। इसने बदले में क्षेत्रीय व राष्ट्रीय राजनीति के मध्य अधिक अंतर उत्पन्न किया है। स्पष्ट शक्तियों व राष्ट्रीय सरकार के लिए जिम्मेदारी सरकारी योजनाओं से प्रेरित प्रधानमंत्री मोदी जी की लोकप्रियता एक राष्ट्रीय राजनीति उत्पन्न करती है जिसे मतदाता के लिए क्षेत्रीय राजनीति से सरलता से प्रथक किया जा सकता है। राष्ट्रीय राजनीति का यह प्रथक स्वरूप राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका को चुनावी दृष्टि से भी कमजोर कर रहा है। क्योंकि क्षेत्रीय दलों के पास भारत में ही प्रायः उत्तम रूप मे परिभाषित, विश्वसनीय राष्ट्रीय मंच होते है। तथापि यह राज्य स्तर पर क्षेत्रीय दलों को सुदृढ़ करने के लिए स्थितियाँ उत्पन्न करता है।

क्षेत्रीय दल व भारत की दलीय प्रणाली

कॉग्रेस दल पारंपरिक रूप से भारतीय दलीय प्रणाली में प्रमुख दल रहा है, किन्तु 1990 के दशक तक दल कमजोर होने लगा। साथ ही, राम जन्मभूमि आंदोलन से महत्वपूर्ण सहायता से भाजपा को लोकप्रियता मिलने लगी। भाजपा ने 1998 मे प्रथम्तया अपने गठबंधन, राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबंधन (एनडीए) के साथ सरकार बनाई, जो भारतीय दलीय प्रणाली में परिवर्तन का संकेत देती है। एक प्रमुख दलीय प्रणाली से भाजपा और काँग्रेस के साथ द्विध्रुवीय प्रणाली में परिवर्तन हुआ है। ध्रुवां का निर्माण–जिसे सामान्यतः भारतीय राजनीति के विद्धवानों द्वारा तृतीय दलीय प्रणाली के रूप में संदर्भित किया जाता है। दलीय प्रणाली के उन्मुखीकरण में परिवतं के पश्चात, मतों का एक महत्वपूर्ण भाग क्षेत्रीय व स्थानीय दलों को भी जाता रहा।

1984 और 2014 के मध्य, क्षेत्रीय दलों ने 43ः से 52ः मतों को प्राप्त किया है। 2014 का राष्ट्रीय चुनाव, जिसमें भाजपा सत्ता में आई, इसमें भी क्षेत्रीय दलों ने वोट शेयर का 49ः प्राप्त किया था। 2014 के राष्ट्रीय चुनाव मे प्रमुख परिवर्तन यह है कि भाजपा ने कॉग्रेस की कीमत पर वोट शेयर को प्राप्त किया था।

अपितु, 2019 में परिवर्तन आ गया। क्षेत्रीय दलों का वोट शेयर गिरकर 44ः हो गया। इसमें से अधिकांश ओडिशा, तेलंगाना तथा पश्चयम बंगाल जैसे राज्यों में भाजपा को सुदृढ़ करने की शक्ति की क्षमता के कारण था, जहां सरकार कम से कम एक दशक से क्षेत्रीय अभिनेताओं का प्रभुत्व रहा है।

मतदाता के दृष्टिकोण से यदि इस तथ्य पर विचार–विमर्श किया जाए कि मतदाता किन परिस्थितियों में राष्ट्रीय दलों को मत देने का चुनाव करेगा और राष्ट्रीय चुनाव में वह किन परिस्थितियों में क्षेत्रीय दलों को अपना मत देगा।

केंद्र पर राजनीतिक आरोपणः– यदि मतदाता सरलता से यह अंतर नहीं कर पता है कि राज्य सरकार क्या दे रही है और केंद्र सरकार क्या दे रही है। अर्थात् सभी लाभों व योजनाओं को राज्य व केंद्र को सोपें जाने का श्रेय जाता है। ऐसे परिदृश्य में, प्रचार की गुणवत्ता और उम्मीदवार को स्थिर रखने के जैसे कारकों को ध्यान मे रखते हुए मतदाता से राज्य और राष्ट्रीय चुनाव में एक ही दल को चयनित करने की आशा की जा सकती है।

वियोज्य राष्टोय व क्षेत्रीय प्राथमिकताएंः– एक मतदाता राष्टोय चुनाव में एक विशेष राष्टोय दल व राज्य के चुनाव मे एक भिन्न दल का चयन किस स्थिति मे करेगा? यदि कोई मतदाता राज्य के चुनाव में एक क्षेत्रीय दल पर एक राष्ट्रीय दल को वरीयता देता है, तो वह राष्ट्रीय स्तर पर भी ऐसा करेगा। हमारा प्रश्न राष्ट्रीय चुनाव में एक विशेष दल की लोकप्रियता में सीमांत परिवर्तन के बारे में है।

मतदाता प्रोत्साहनों के इस विचार–विमर्श से कुछ आधारिक अंतज्ञान उभर कर आते है। प्रथम, चूंकि मतदाता विभिन्न राजनीतिक भूमिकाओं व संस्थागत कार्यों को केंद्र व राज्य स्तरों पर करने मे सक्षम है। इस प्रकार, हम दो कारणों से 2014 या 2019 जैसे राष्ट्रीय चुनावों मे विभाजित टिकट मतदान की अधिक संभावना का अनुमान लगते है, प्रथम, भाजपा का प्रभाव था और वह अन्य क्षेत्रीय दलों के साथ विचार–विमर्श किए बिना संभवतः एक दलीय बहुमत बना सकती थी। द्वितीय, सत्तारूढ़ भाजपा द्वारा किया गया सत्ता का केन्द्रीकरण मतदाताओं के मन मे राज्य व राष्ट्रीय राजनीति मे मध्य स्पष्ट अंतर उत्पन्न करता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि जैसे जैसे भाजपा ने चुनावी शक्ति व केन्द्रीकृत सत्ता प्राप्त की है, क्षेत्रीय दलों ने कुछ हद तक अपनी शक्ति खों दी है। यह राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा के पक्ष में विभाजित टिकट पर वोट करने की मतदाताओं की इच्छा पर प्रकट हुआ ह। यदि यही तथ्य हम राज्य राजनीति के बारे में इसका विश्लेषण करते है तो यह एक चुनौतीपूर्ण प्रश्न है। यह कोई आशा नहीं कर सकता कि भाजपा अपनी केन्द्रीकृत प्रवृतियों का प्रयोग क्षेत्रीय दलों की ठोस मतदाता आधार बनाने की क्षमता को कम करने के लिए करेगी। किन्तु भाजपा के पास इन राज्यों में से कई में पार्टी कैडर की शक्ति भी नहीं है, जो राज्य चुनावों में प्रतिस्पर्धा करने मे

सक्षम हो। प्रायः एक सिद्धांत के रूप मे हम यह आशा कर सकते है कि भाजपा राज्य की राजनीति में और प्रवेश करेगी, किन्तु वह अपने राष्ट्रीय अवतार और नरेंद्र मोदी जो की लोकप्रियता का प्रयोग मतदाताओं को जीतने के लिए करेगी, क्योंकि इसकी क्षेत्रीय अपील कमजोर है।

यह ध्यान मे रखना महातावपूर्ण है कि राष्ट्रीय क्षेत्र मे इस समय क्षेत्रीय दल कितने भी कमजोर क्यों न हो, वे अभी भी भाजपा के मुख्य विपक्षी दल है। कॉग्रेसस और भाजपा विभिन्न राज्यों मे आपने सामने संघर्ष करते है। और वर्तमान में भाजपा राष्ट्रीय चुनावों में 90: से अधिक लड़ाई पर विजय प्राप्त करती है। व्यावहारिक रूप से, कॉग्रेस भाजपा का अब अधिक विरोध नहीं करती है:— यह भूमिका अब क्षेत्रीय दलों पर छोड़ दी गई है। इसके अतिरिक्त, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु व केरल जैसे कुछ महत्वपूर्ण राज्यों ने इस प्रवृती को कम किया है तथा 2019 के चुनावों मे शेष भारत के लिए चुनौती एक विश्वसनीय और सुसंगत राष्ट्रीय प्रारूप तैयार करने में है।

♦♦♦♦♦

- **संदर्भ सूची**


- Aiyar, Yamini, 2019. "Modi Consolidates Power: Leveraging Welfare Politics" Journal of democracy 30(4). Doi:10.1353/jod.2019.0070.
- Chibber, Pradeep and Rahul Verrma, 2019 "The Rise of the Second Dominant Party System in India: BJP's New Coalition in 2019." Studies in indian politics 7(2):131-148.
- Compbell, Angus and Warren E Miller, (1957), " The motivational basis of straight and split ticket voting" American Political Science Review 51 (2): 293-312. Doi:10.2307/1952193.

3

# राष्ट्रीय दल एवं क्षेत्रीय राजनीतिः परिवर्तनीय परिप्रेक्ष्य

डॉ. अमित अग्रवाल

असिस्टेंट प्रोफेसर (वाणिज्य), राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उत्तर प्रदेश

किसी देश के आर्थिकएवं सामाजिक विकास के लिए राजनीतिक परिवर्तन और परिपक्वता एक महत्वपूर्ण कारक है। वर्ष 2010 और 2021 के मध्य भारत का राष्ट्रीय दल एवं क्षेत्रीय राजनीति परिवर्तनीय का वर्तमान दशकीय परिप्रेक्ष्य इस आलेख द्वारा विश्लेषित किया गया है। केंद्र में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के स्थान पर भारतीय जनता पार्टी की सरकार सत्तारूढ़ हो गई है। एक दशक में कई राज्यों में क्षेत्र दलों की सरकार आई और गई हैं। भारत के विभिन्न राजनीतिक दलों में और उनकी विचारधारा में और उनके राजनीतिक सिद्धांतों में कोई विशेष अंतर दृष्टिगोचर नहीं होता है। भारतीय जनता के पास सीमित विकल्प है। राष्ट्रीय स्तर पर जनता की मूलभूत समस्याएं समाधान तलाश रही हैं।

सत्रहवीं लोक सभा में राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दल की सीटें

सारणी संख्या–01

| राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दल का नाम | सीटें | राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दल का नाम | सीटें |
|---|---|---|---|
| भारतीय जनता पार्टी | 303 | राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी | 5 |
| भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस | 52 | समाजवादी पार्टी | 5 |
| द्रविड़ मुन्नेत्र कड़गम | 23 | तेलुगु देशम पार्टी | 3 |
| अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस | 22 | भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) | 3 |
| वाई एस आर कांग्रेस पार्टी | 22 | इण्डियन यूनियन मुस्लिम लीग | 3 |
| शिवसेना | 18 | भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी | 2 |
| जनता दल (यूनाइटेड) | 16 | शिरोमणि अकाली दल | 2 |
| बीजू जनता दल | 12 | आम आदमी पार्टी | 1 |
| बहुजन समाज पार्टी | 10 | जनता दल (सेक्युलर) | 1 |
| तेलंगाना राष्ट्र समिति | 9 | झारखंड मुक्ति मोर्चा | 1 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| लोक जनशक्ति पार्टी | 6 | निर्दलीय | 4 |

सारणी संख्या– 01 को विश्लेषित कर ज्ञात होता है कि 17 वीं लोकसभा में 21 दलों की पार्टी के सदस्य हैं। चार राष्ट्रीय दलों के पास लोकसभा में 370 सीटें हैं, शेष लोकसभा की सीटें 17 क्षेत्रीय दलों के पास हैं। अर्थात् लोकसभा में क्षेत्रीय दलों का प्रतिनिधित्व 16 वीं में लोकसभा की तुलना में घट गया है।

भारत के सभी राष्ट्रीय पार्टियों की सूची

सारणी संख्या–02

| क्र.सं. | दल का नाम | गठन | क्र.सं. | नाम | गठन |
|---|---|---|---|---|---|
| 01 | भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस | 1885 | 05 | बहुजन समाज पार्टी | 1984 |
| 02 | भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी | 1925 | 06 | तृणमूल कांग्रेस | 1998 |
| 03 | मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी | 1964 | 07 | राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी | 1999 |
| 04 | भारतीय जनता पार्टी | 1980 | 08 | नेशनल पीपुल्स पार्टी | 2013 |

क्षेत्रीय दलों के साथ राष्ट्रीय दलों के शासन वाले राज्य

सारणी संख्या – 03

| कम सख्या | राज्य | मुख्यमंत्री का नाम | मुख्य क्षेत्रीय दल (सी.एम. वाला दल) | सहयोगी दल |
|---|---|---|---|---|
| 01 | महाराष्ट्र | उद्धव ठाकरे | शिवेसना | राकांपा, इंडियन नेशनल कांग्रेस |
| 02 | बिहार | नीतीश कुमार | जदयू | भाजपा |
| 03 | मेघालय | कोनरॉड संगमा | एनपीपी | भाजपा |
| 04 | नगालैंड | नेफ्यू रियो | एनडीपीपी | भाजपा |
| 05 | सिक्किम | प्रेम सिंह तमांग | एसकेएम | भाजपा |
| 06 | मिजोरम | जोरमथंगा | एमएनएफ | भाजपा |
| 07 | झारखंड | हेमंत सोरेन | झामुमो | इंडियन नेशनल कांग्रेस, राजद |

सारणी संख्या– 03 को विश्लेषित कर ज्ञात होता है कि भारत के 7 राज्यों में क्षेत्रीय दल के नेतृत्व में राज्य में उनकी सरकार है। पांच राज्यों में भारतीय जनता पार्टी सहयोगी दल के रूप

में हैं जबकि 2 राज्यों में इंडियन नेशनल कांग्रेस सहयोगी दल के रूप में हैं जबकि यह दोनों पार्टियां राष्टोय दल हैं।

## क्षेत्रीय दलों के शासन वाले राज्य

### सारणी संख्या – 04

| कम सख्या | राज्य | मुख्यमंत्री | क्षेत्रीय दल |
|---|---|---|---|
| 01 | तमिलनाडु | पलानीसामी | अन्नाद्रमुक |
| 02 | आंध्र प्रदेश | जगनमोहन रेड्डी | वाई.एस.आर. कांग्रेस |
| 03 | तेलंगाना | के. चंद्रशेखर राव | टी.आर.एस. |
| 04 | ओडिशा | नवीन पटनायक | बीजद |
| 05 | पश्चिम बंगाल | ममता बनर्जी | तृणमूल |
| 06 | दिल्ली | अरविंद केजरीवाल | आम आदमी पार्टी |

सारणी संख्या– 04 को विश्लेषित कर ज्ञात होता है कि भारत के 6 राज्यों में क्षेत्रीय दल की सरकार है। सरकार संचालन हेतु राष्ट्रीय दल की आवश्यकता इन राज्यों में नहीं है।

## राष्ट्रीय दलों के शासन वाले राज्य

### सारणी संख्या– 05

| कम सख्या | राज्य का नाम | राष्ट्रीय दल का | मुख्यमंत्री का नाम | टिप्पणी |
|---|---|---|---|---|
| 01 | उत्तराखंड | भारतीय जनता पार्टी | तीरथ सिंह रावत | कांग्रेस को हराया व 4 वर्ष पश्चात मुख्यमंत्री बदले |
| 02 | गुजरात | भारतीय जनता पार्टी | विजय रुपाणी | 4 बार कांग्रेस को हराया |
| 03 | कर्नाटक | भारतीय जनता पार्टी | बीएस येदियुरप्पा | जहाँ जनता दल सेकुलर और कांग्रेसी सरकार गिरने के पश्चात |
| 04 | हरियाणा | भारतीय जनता पार्टी | मनोहर लाल खट्टर | जहाँ दुष्यंत चौटाला उपमुख्यमंत्री हैं जेजेपी के। |
| 05 | हिमाचल प्रदेश | भारतीय जनता पार्टी | रमेश ठाकुर | कांग्रेस को हराया |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 06 | असम | भारतीय जनता पार्टी | हेमंत बिस्वसरमा | पूर्वोत्तर के बड़े राज्य में प्रथम बार सत्तारूढ़ पार्टी |
| 07 | त्रिपुरा | भारतीय जनता पार्टी | बिप्लव कुमार देव | 25 वर्ष पश्चात कांग्रेसी के शासन का अंत |
| 08 | गोवा | भारतीय जनता पार्टी | प्रमोद सावंत | मनोहर पारीक के निधन के पश्चात मुख्यमंत्री बन सत्ता में वापसी |
| 09 | मणिपुर | भारतीय जनता पार्टी | एन बीरेन सिंह | कांग्रेस को हराया |
| 10 | अरुणाचल प्रदेश | भारतीय जनता पार्टी | पेमा खंडू | कांग्रेस को हराया |
| 11 | मध्य प्रदेश | भारतीय जनता पार्टी | शिवराज सिंह चौहान | कमलनाथ कांग्रेसी सरकार गिरने के पश्चात मुख्यमंत्री बने। |
| 12 | उत्तर प्रदेश | भारतीय जनता पार्टी | आदित्य नाथ योगी | क्षेत्रीय दल सपा को हराकर मुख्यमंत्री बने |
| 13 | पंजाब | इंडियन नेशनल कांग्रेस | अमरिंदर सिंह | क्षेत्रीय दल अकाली दल और भाजपा को हराकर मुख्यमंत्री बने |
| 14 | राजस्थान | इंडियन नेशनल कांग्रेस | अशोक गहलोत | भारतीय जनता पार्टी को हराकर मुख्यमंत्री बने |
| 15 | छत्तीसगढ़ | इंडियन नेशनल कांग्रेस | भूपेश बघेल | भारतीय जनता पार्टी को हराकर मुख्यमंत्री बने। |
| 16 | केरल | वाम डेमोक्रेटिक फ्रंट (एलडीएफ) | पिनाराय विजयन | इंडियन नेशनल कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (यूडीएफ) को हराया |

सारणी संख्या – 05 को विश्लेषित कर ज्ञात होता है कि भारत के 16 राज्यों में राष्ट्रीय दलों की सरकार है। इन राज्य में इससे पूर्व या तो क्षेत्र दल की सरकार थी या राष्ट्रीय दल की सरकार थी। चित्रा जी ऐसे हैं जहां पुनः सरकार बनी है।

धारा 370 समाप्त कर जम्मू और कश्मीर राज्य को 2 केंद्र शासित प्रदेशों में विभाजित कर दिया गया। पुदुचेरी में उपराज्यपाल किरण बेदी और मुख्यमंत्री वी नारायणस्वामी के मध्य कई नीतियों को लागू करने के प्रश्न पर शुरू से टकराव रहा है। किरण बेदी को उप राज्यपाल के पद से हटाने के पश्चात् मुख्यमंत्री विधानसभा में बहुमत सिद्ध नहीं कर पाए और वहां राष्ट्रपति शासन लागू के पश्चात् विधानसभा चुनाव करवाए जा रहे हैं।

निष्कर्षः– लोकसभा और विधानसभा के चुनाव में प्रायः विषय भिन्न– भिन्न होते हैं। लोकसभा चुनाव में भारतीय नागरिक राष्ट्रीय विषयों को अधिक महत्व दते हैं जबकि विधानसभा चुनाव में क्षेत्रीय एवं स्थानीय विषयाको महत्व दिया जाता है। 16 वीं लोकसभा में महंगाई और भ्रष्टाचार प्रमुख विषय थे जबकि 17 वीं लोकसभा सभा में राष्ट्रवाद, पुलवामा, प्रवासियों की अवैध घुसपैठ आदि प्रमुख विषय थे। राष्ट्रीय स्तर पर नोटबंदी और वस्तु एवं सेवा करने सामान्य जनता को प्रभावित किया। कुछ राज्य नागरिकों ने अच्छी सरकार के लिए क्षेत्रीय दलों को राष्ट्रीय दलों पर वरीयता दी है। दिल्ली में केजरीवाल सूचना अधिकार और नागरिक अधिकारों को जलाने के लिए आगे बढ़े। आंध्र प्रदेश में जगन मोहन रेड्डी एक नवीन स्वरूप उभर कर सामने आए। तमिलनाडु में आज भी तमिल अस्मिता एक प्रमुख विषय है जिसके कारण वहां स्थानीय दल की सत्ता बरकरार है। उड़ीसा एक ऐसा राज्य है जहां नवीन पटनायक पर जनता का 25 वर्ष से विश्वास है। बिहार में नीतीश कुमार को जनता ने दूसरी बार निरन्तर मुख्यमंत्री बनाया है। कुछ राज्य में सत्तारूढ़ दल को जनता की नाराजगी का सामना करना पड़ा और सत्ता से हाथ धोना पड़ा। भारत विविध संस्कृति वाला देश है।

अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि यहां धर्म, जाति, भाषा, क्षेत्र, लिंग आदि का प्रभाव मतदाताओं के मनोविज्ञान पर पड़ता है जो राजनीतिक परिवर्तन का वाहक है। वास्तविक विषय निर्धनता, रोजगार, आधारभूत संरचना सोशल मीडिया के दौर में पीछे रह गए हैं।

♦♦♦♦♦

संदर्भ :

https://eci.gov.in/

# 4

# राष्ट्रीय दलों का क्षेत्रीय राजनीति में योगदान एवं चुनौतियां

**प्रियंका बारगल**

**शोधार्थी, अर्थशास्त्र अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, (म.प्र.)**

**हितेन्द्र बारगल**

**सहायक प्राध्यापक, शासकीय महाविद्यालय गुनौर, जिला पन्ना, (म.प्र.)**

भारत में प्राचीन काल से विभिन्न राजनीतिक दलों का अस्तित्व रहा है यदि हम हमारे वैदिक काल की बात करें, तो उस समय भी हमे लोकतंत्र के अतिरिक्त राजतंत्र के दर्शन होते हैं। इतिहास में आगे दृष्टिपात करने पर पर हम पाते हैं कि गौतम बुद्ध के समय सोलह महाजनपदों में भी राजनीतिक प्रभुत्व को लेकर समय–समय पर विभिन्न लड़ाइयाँ होती रही तथा सभी महाजनपदों द्वारा अपने–अपने क्षेत्रों के विस्तार हेतु विभिन्न राजनीतिक दलों के माध्यम से तथा कुशल नेतृत्व कर्ता के नेतृत्व में साम्राज्य विस्तार की नीति अपनाई जाती रही। स्वतंत्रता से पूर्व भी भारत में विभिन्न रियासतों के अपने–अपने दल रहे, वहीं स्वतंत्रता के पश्चात् भी भारत में कभी एक दल का प्रभुत्व न रह सका। वर्ष 1885 में कांग्रेस दल की स्थापना के पश्चात् दल प्रमुख की कतिपय नीतियों से संतुष्ट न होने के कारण विभिन्न व्यक्तियों द्वारा अपनी–अपनी राजनीतिक पार्टी की स्थापना की गई। उदाहरण के तौर पर मोतीलाल नेहरु जी ने स्वराज दल की स्थापना की थी, इसी प्रकार भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस ने भी अपनी नीतियों का अनुसरण करने हेतु अपने–अपने दलों की स्थापना की, परन्तु उस समय इन सभी नेताओं का एक ही लक्ष्य था, वह था भारत की स्वतंत्रता व उसका विकास।

वर्तमान में भारत में राष्ट्रीय दलों की संख्या स्पष्ट तौर पर देखें तो यह संख्या लगभग आठ है जैसे– भारतीय जनता पार्टी, कांग्रेस, समाजवादी पार्टी, इन राष्ट्रीय दलों के अतिरिक्त भारत में कई क्षेत्रीय दल है, जैसे– शिरोमणि अकाली दल, जम्म् एंड कश्मीर नेशनल कांग्रेस, तेलुगू देशम पार्टी, असमगढ़, जननायक जनता पार्टी, झारखंड मुक्ति मोर्चा ये क्षेत्रीय दल सदैव से राष्ट्रीय दलों के लिए अवरोधक का काम करते रहे है। देखा जाए तो क्षेत्रीय दलों ने 1967 से ही अपने–अपने क्षेत्रों की राजनीति में प्रभुत्व जमा लिया था। राष्ट्रीय दल ,क्षेत्रीय विकास के साथ–साथ संपूर्ण देश के विकास के लिए उत्तरदायी होते हैं। क्षेत्रीय दलों में जहां संकीर्णता

पाई जाती है यह दल मात्र अपने क्षेत्र के विकास के बारे में सोचते हैं अपने क्षेत्र को विकसित करने में इन क्षेत्रीय दलों का अधिक ध्यान रहता है, क्योंकि इन दलों की विशेषता यह होती है कि यह किसी एक प्रभावशाली व्यक्ति की धारणा या विचारों के अनुसार ही चलते हैं, इस कारण उस व्यक्ति के अनुसार से ही तथा उसके आसपास एवं उनके परिवार के अनुसार से ही तथाकथित क्षेत्र का विकास होता रहता है, फिर चाहे वह विकास असंतुलित ही क्यों ना हो। इसके विपरीत भारत में जो राष्ट्रीय दल है जैसे कि भारतीय जनता पार्टी, कांग्रेस, बहुजन समाज पार्टी आदि यह किसी क्षेत्र विशेष का ना सोचते हुए पूरे देश के विकास के बारे में सोचते हैं। केंद्र में जो सत्तारूढ़ दल होता है उसका प्रत्येक राज्य पर पूरा अधिकार होता है। कई बार संबंधित राज्य के संबंध में, वहां के राज्यपाल से परामर्श करके आवश्यकतानुसार केंद्र वहां पर राष्ट्रपति शासन लगाकर कठिन परिस्थितियों को नियंत्रित कर सकता है। क्षेत्रीय दल सामान्य तौर पर भाषाई आधार पर संगठित होते हैं, जबकि हमार भारतीय संविधान में "वसुधैव कुटुंबकम" की धारणा को अपनाते हुए, "पंथनिरपेक्षता" शब्द का उल्लेख करते हुए सभी पंथो के विकास पर बल दिया गया है हमारे देश का कोई भी धर्म विशेष नहीं है, अपितु सभी धर्मों का हम सम्मान करते हैं, किंतु कालांतर में यही "पंथनिरपेक्षता" शब्द कुछ राजनीतिक दलों के तथाकथित संकीर्ण मानसिकता वाले व्यक्तियो ने "धर्मनिरपेक्षता" में परिवर्तित दिया तथा इसी बात का अधिक लाभ उठाते हुए क्षेत्रीय दलों ने पूरे राष्ट्र के मध्य धर्म की जात–पात की दीवार खड़ी करते हुए, अपने स्वार्थ के लिए लाभ उठाए।

वर्तमान में जिस प्रकार से सत्तारूढ़ राष्ट्रीय दल द्वारा 'एक कर एक देश', 'स्वच्छ भारत अभियान' चलाकर पूरे देश में एकता की लहर लाई गई, वहीं दूसरी और 'नागरिकता संशोधन अधिनियम' लाकर ना केवल देश के अपितु पड़ोसी देशों के भारतीय नागरिकों को भी सुरक्षा कवच देने का महत्वपूर्ण कार्य किया, वहीं भारत देश में गैर–कानूनी रूप से रह रहे नागरिकों को, जो तथाकथित क्षेत्रीय दलों के वोट बैंक के रूप में कार्य करते हैं, उनका उन्मूलन करना, भारत की आंतरिक शांति के अनुकूल ही है। प्रमुख राष्ट्रीय दलों पर एक दृष्टि डालं, तो हमें ज्ञात होता है कि ये प्रमुख दल भी आंतरिक और बाहरी रूप से किसी ना किसी चुनौती का सामना कर रहे हैं।

इन चुनौतियों में सर्वप्रमुख चुनौती आंतरिक रूप से लोकतंत्र का अभाव है। इन दलों के आपसी नेताओं में कई बार खींचातानी, आरोप–प्रत्यारोप का निरंतर सिलसिला चलता रहता है, जो कई बार दल–बदल के रूप में सामने आता है। कुछ जयचंद जैसे व्यक्तियों के कारण राजनीति एक

अखाड़े के रूप में परिवर्तित हो जाती है। हर कोई एक दूसरे के रहस्यों पर से पर्दा उठाने में लगा रहता है, जो कि देश की आंतरिक व्यवस्था के साथ–साथ सुरक्षा के लिए भी खतरा रहती है, दूसरी प्रमुख चुनौती वंशवाद है। राष्ट्रीय दलों में भी वंशवाद का दर्शन होता है, जहां बस पीढ़ी दर पीढ़ी सामान नेतृत्व जो की कमजोर हो जाने पर भी हटता नहीं है, तथा दूसरे सुदृढ़ तथा सक्षम लोगों को आगे आने का अवसर नहीं दे पाता, इस प्रकार से भीतर ही भीतर देश को कमजोर कर देता है, इसके अतिरिक्त क्षेत्रीय दलों द्वारा चुनावी वातावरण में अपनी सत्ता को कायम रखने हेतु, जो राजनीतिक हिंसा का सहारा लिया जाता है, वह किसी भी राष्ट्र के लिए दुखदाई सिद्व होता है।

अंत में भारत जैसे विशाल क्षेत्रफल एवं जनसंख्या वाले देश के लिए यही उचित होगा कि भले ही देश की विविधता को देखते हुए, यहां विभिन्न क्षेत्रीय दल अपनी स्थापना करते हुए अपने क्षेत्र विशेष का विकास करें, पर सत्तारूढ़ राष्ट्रीय दल की नीतियों का पालन भी उतनी ही गंभीरता से करें तथा सभी दल एकजुट होकर संपूर्ण भारत के विकास के लिए अपना योगदान दें, जब भारत के सभी राज्य अपना विकास करते हुए, पूरे राष्ट्र का विकास करने का भी संकल्प ले ले, तो वह दिन दूर नहीं जब हमारा देश एक सुंदर बगिया जैसा खिल उठेगा जिसमें, हर प्रकार का, प्रत्येक रंग का, प्रत्येक सुगन्ध का पुष्प होगा, पर वह एक सुंदर बगीचे का प्रतिनिधित्व करते हुए, चारों और सुगन्ध ही सुगन्ध बिखरेगा।

राष्ट्रीय दलः देशव्यापी दलं, जिन्हें राष्ट्रीय दल कहा जाता है। इन दलों की भिन्न– भिन्न राज्यों में अपनी–अपनी इकाइयाँ हैं। किंतु सभी बड़ी इकाइयाँ उन्हीं नीतियों का पालन करती हैं, जो राष्ट्रीय स्तर पर निश्चित की जाती हैं।

क्षेत्रीय दलः जिस राजनीतिक दलों का प्रभाव एक या दो राज्यों तक ही सीमित है, वे क्षेत्रीय दल की श्रेणी में आते है।

♦♦♦♦♦

- संदर्भ सूची


- https://hindi.eci.gov.in/files/category/206-मान्यता-प्राप्त-राष्ट्रीय-दल/
- https://testbook.com/blog/hi/political-parties-in-india-gk-notes-pdf/
- https://ncert.nic.in/textbook/pdf/jhss406.pdf
- https://hindi.webdunia.com/article/general-election-history//भारत-की-प्रमुख-राजनीतिक-पार्टियां-114011300056_1.htm
- https://www.elections.in/bhartiya-chunav/political-parties-in-india/

5

# राष्ट्रीय राजनीति एवं क्षेत्रीय दलः एक परिवर्तनीय परिदृश्य

राम किशोर

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

भारत एक लोकतांत्रिक देश है। लोकतांत्रिक शासन में जनता द्वारा जनता के कल्याण के लिए एवं जनता द्वारा शासन किया जाता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में सभी नागरिकों को यह अधिकार होता है कि उनकी आवाज को सुना जाए चाहे वे किसी भी धर्म, जाति, लिंग या क्षेत्र के हों। भारत में संघीय शासन प्रणाली अपनाई गई है। संघीय शासन व्यवस्था में नीतियाँ एवं कार्यक्रम राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखकर बनाए जाते हैं जिसके कारण क्षेत्रीय समस्याएं या तो उपेक्षित हो जाती है या उन पर कम ध्यान दिया जाता है। ऐसी स्थिति में उन क्षेत्रीय विषयों को आवाज देने और उन पर राष्ट्र का ध्यान आकर्षित करने के लिए क्षेत्रीय दलों का उदय होता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में क्षेत्रीय दलों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है क्योंकि ये न केवल क्षेत्रीय समस्याएँ या विषयों को जो उपेक्षित हैं कि ओर शासन व्यवस्था का ध्यान आकर्षित करते हैं अपितु उसके निवारण के लिए प्रयास भी करती हैं।

राज्य/क्षेत्रीय दलों का विकासः—वे दल जिनके पास एक राज्य में पर्याप्त मत अथवा सीटें हों, उन्हें चुनाव आयोग द्वारा राज्य दल के रूप में अधिकृत किया जा सकता है। संबंधित राज्य में राज्य दल के रूप में मान्यता मिलने से दल को एक विशेष चुनाव चिन्ह आरक्षित करने का विकल्प मिल सकता है। एक दल को एक या अधिक राज्यों में मान्यता प्राप्त हो सकती है। चार राज्यों में मान्यता प्राप्त दल को स्वतः ही एक राष्ट्रीय दल के रूप में मान्यता प्राप्त हो जाती है। भारत में क्षेत्रीय दलों का इतिहास काफी पुराना है। हमारे देश में अनेक क्षेत्रीय दलों का उदय विशेष परिस्थितियों के परिणामस्वरूप हुआ है। पंजाब में 1920 से ही अकालियों की राजनीति चलती आ रही है। कश्मीर में पहले मुस्लिम कांफ्रेंस बनी जिसे बाद में नेशनल कान्फ्रेंस के नाम से जाना गया। तमिलनाडु में जस्टिस पार्टी का गठन हुआ। 1949 में द्रमुक पार्टी का गठन हुआ। इसके अतिरिक्त बंगला कांग्रेस, केरल कांग्रेस, उत्कल कांग्रेस जैसे कांग्रेस क्षेत्रीय दलों तथा विशाल हरियाणा पार्टी, गणतंत्र परिषद आदि का भी उदय हुआ है। ये सभी दल अलग—अलग राज्यों में प्रभावशालो है न कि किसी विशेष क्षेत्र में।

भारत एक बहुभाषी, बहुजातोय, बहुक्षेत्रीय और विभिन्न धर्मों का देश है। भारत जैसे विशाल एवं विभिन्नताओं से भरे देश में क्षेत्रीय दलों के उदय के अनेक कारण हैं। प्रथम प्रमुख कारण जातीय, सांस्कृतिक एव भाषायी विभिन्नताएँ हैं। विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की अपनी समस्याएँ होती हैं जिन पर राष्ट्रीय दलों या केन्द्रीय नेताओं का ध्यान नहीं जाता परिणामस्वरूप क्षेत्रीय दलों का उदय होता है। दूसरा केन्द्र अपनी शक्तियों का प्रयोग मनमाने ढंग से करता रहा है। केन्द्र की शक्तियों कें केन्द्रीयकरण की इसी प्रवृत्ति के कारण अनेक क्षेत्रीय दलों का जन्म हुआ है। तीसरा, उत्तरी भारत की प्रधानता को लेकर आशंकाएँ भी क्षेत्रोय दलों के उदय का कारण रहा है। क्षेत्रीय दलों के उदय का चौथा प्रमुख कारण कांग्रस दल की संगठनात्मक दोष भी है। केन्द्र में कांग्रेस की स्थिति तो मजबूत थी परन्तु राज्यों में कांग्रेस संगठन क्षीण होता जा रहा था। परिणामस्वरूप कांग्रेस में संगठन संबंधी फूट और कमजोरियाँ आ गई और राज्य स्तर के अनेक नेताओं ने क्षेत्रीय दलों क गठन में प्रमुख भूमिका निभाई। पाँचवा, क्षेत्रीय दलों उदय का कारण जातीय असंतोष भी रहा है। अनुसूचित जातियों, जनजातियों एवं अन्य पिछड़े वर्गो के लिए सामाजिक न्याय की माँग हेतु भी क्षेत्रीय दलों का उदय हुआ है ।

हमारे देश में मुख्य रूप से तीन प्रकार के क्षेत्रीय दल पाए जोते हैं। पहला वे दल जो जाति, धर्म, क्षेत्र अथवा सामुदायिक हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं एवं उन पर आधारित हैं। ऐसे दलों में अकाली दल, द्रमुक, शिवसेना, नेशनल कांफ्रेस, क्षारखण्ड पार्टी, नागालैण्ड नेशनल डेमोक्रेटिक पार्टी आदि प्रमुख हैं। दूसरे वे दल जो किसी समस्या विशेष को लेकर राष्ट्रीय दलों विशेष रूप से कांग्रेस से पृथक होकर बने हैं। ऐसे दलों में बंगला कांग्रेस, केरल कांग्रेस, उत्कल कांग्रेस, विशाल हरियाणा आदि है। तीसरे प्रकार के दल वे दल हैं जो लक्ष्यों और विचारधारा के आधार पर तो राष्ट्रीय दल हैं किन्तु उनका समर्थन केवल कुछ लक्ष्यों तथा कुछ विषयों में केवल कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित है। ऐसे दलों में फारवर्ड ब्लॉक मुस्लिम लीग, क्रान्तिकारो सोशलिस्ट पार्टी आदि प्रमुख हैं।

वर्तमान राजनोति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका– भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक गणराज्य है इस नाते इस देश में प्रत्येक व्यक्ति, जाति, वर्ग और समाज की आवाज सत्ता के केन्द्र तक पहुंचे इसकी व्यवस्था की गई है। पिछले कुछ दशकों से हो रहे चुनावों के परिणामों पर गौर करें तो यह समझ आता है कि वर्तमान में ये क्षेत्रीय दल राष्ट्रीय दलों के लिए बड़ी चुनौती बनते जा रहे हैं। क्षेत्रीय दलों के कारण इन राष्ट्रीय दलों को कई राज्यों में इनका सहारा लेना पड़ता है और हालात ये है कि भारतीय जनता पार्टी जो वर्तमान में केन्द्र की सत्ता में उसका कई

राज्यों में वजूद तक नहीं है वहीं दूसरी तरफ कांग्रेस जिसने सबसे लम्बे समय तक देश में राज किया है वह अपने वजूद के लिए संघर्ष कर रही है। क्षेत्रीय दलों के बढ़े प्रभाव ने इन राष्ट्रीय दलों के समक्ष कई जगह तो अस्तित्व का संकट पैदा कर दिया है। वर्तमान राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका बेहद महत्त्वपूर्ण हो गई है।

आज राजनीतिक महाकुण्ड में क्षेत्रीय दलों को जो महत्त्व दिया जा रहा है उसका देश के एकात्मक संधीय ढाँचे पर गम्भीर बहुमुखी प्रभाव पड़ेगा। हमारे यहां पर क्षेत्रीय दल कुकुरमुत्तों की भांति है। ये दल वर्ग संघर्ष और प्रांतवाद–भाषावाद के जनक हैं। कुछ पार्टियां वर्ग संघर्ष को कुछ पार्टियां प्रांतवाद और भाषावाद को बढ़ावा देने वाली पार्टियां बन गयीं हैं। इनकी तर्ज पर जो भी दल कार्य कर रहे हैं उनकी ओर एक विशेष वर्ग के लोग आकर्षित हो रहे हैं, जिन्हें ये अपना वोट बैंक मानते हैं। इस वोट बैंक को और भी सुदृढ़ करने के लिए ये दल किस सीमा तक जा सकते हैं– कुछ कहा नहीं जा सकता। देश के सामाजिक परिवेश में आग लगती हो तो लगे, संविधान की व्यवस्थाओं की धज्जियां उड़ती हों तो वे भी उड़ें राष्ट्र के मूल्य उजडते हों तो उजडें इन्हें चाहिए केवल वोट इनकी इस नीति का परिणाम यह हुआ है कि भाषा प्रांत और वर्ग की अथवा संप्रदाय की राजनीति करने वालों के पक्ष में पिछले 20 वर्षों में बड़ी शीघ्रता से जन साधारण का ध्रुवीकरण हुआ है।

क्षेत्रीय दल राष्ट्रीय दलों को अपने राज्य में चुनाव लड़वाते हैं और राज्य की राजनीति में राष्ट्रीय दलों का सहयाग लेकर सत्ता पर आसीन होते हैं। इनमें से कुछ तो ऐसे हैं जिनको अपने राज्य की राजनीति के लिए राष्ट्रीय दलों के सहारे की भी जरूरत नहीं है और जब ये क्षेत्रीय दल राष्ट्र की राजनीति में आते हैं तो ये राष्ट्रीय दल इनके सहारे से अपनी सरकार बनाते हैं। क्षेत्रीय दल क्षेत्रीय हितों की रक्षा के नाम पर या जाति व्यवस्था के नाम पर उदित होते हैं और इसी कारण ये अपना प्रभाव अपने राज्य में बनाने में सक्षम रहे हैं। जातिय, भाषायी, सांस्कृतिक विभिन्नता एवं देश की विशालता भी क्षेत्रीय दलों के जन्म का प्रमुख कारण रही है। एक बड़ा कारण क्षेत्रीय दलों के अस्तित्व में आने का कांग्रेस पार्टी भी रही है। कांग्रेस पार्टी में जब जब संगठन में बिखराव हुआ तब तब कांग्रेस के क्षेत्रीय क्षत्रपों ने अपने अपने क्षेत्र में दल बनाए और कांग्रेस से अलग हो गए। ममता बनर्जी, शरद पंवार, स्वर्गीय पी. ए. संगमा सहित ऐसे कई उदाहारण है जिन्होंने कांग्रेस से अलग होकर अपने दल बनाए और आज वे कांग्रेस के लिए सरदर्द बने हुए हैं।

हालात ये हैं कि क्षेत्रीय दलों के नेता रेल मंत्रालय, कोयला मंत्रालय सहित केन्द्र के कई महत्वपूर्ण मंत्रालयों पर काबिज रहे हैं और इसका परिणाम यह हुआ है कि जब लालू यादव रेल मंत्री बनते हैं तो देश की सारी ट्रेनों का रूख बिहार की तरफ होता है और तब ममता बनर्जी ये पदभार संभालती है तो बंगाल रेल से मालामाल हो जाता है। झारखण्ड के शीबू सोरेन जब कोयला मंत्री थे तो बिहार और झारखण्ड के कोयला भण्डार के क्या हाल थे ये देश से नहीं छिपा। कहने का मतलब ये है कि तब भी क्षेत्रीय दल हावी रहे तब देश में असंतुलित विकास हुआ। वर्तमान में राज्यों में हुए चुनाव में भी क्षेत्रीय दलों का वर्चस्व प्रभावी रहा और इन दलों ने राष्ट्रीय दलों के सामने हार नहीं मानी बल्कि अपना वजूद साबित किया। ये इस बात का सबूत है कि वर्तमान में भी असंतुलित विकास और भाषा व जाति की प्रधानता ने अपने आप को कायम रखा है।

पूर्व के 20 वर्षों में हमने पतन की इस अवस्था तक छलांग, लगाई है तो अगले 20 वर्षों में हम कहां पहुंचेगे निश्चित नहीं। परिणाम यह होगा कि भारत में राजनीतिक दलों का नामकरण सीधे सीधे जाति, वर्ग, प्रांत, भाषा और मतों के नामों पर होगा। जातीय संगठन जो आज उभर रहे हैं। वो स्पष्ट कर रहे हैं कि हम बढ़ रहे हैं भयंकर वर्ग संघर्ष की ओर, इसे और भी स्पष्ट करें तो एक गृहयुद्घ की ओर। ऐसी परिस्थिति में इतना अवश्य है कि भारत नाम के राष्ट्र की स्वतंत्रता अवश्य संकटों में फंस जाएगी। राष्ट्र के भीतर स्वतंत्र वर्गों की निजी सेनाएं तैयार की जा रही है। ये मान सम्मान की लड़ाईयां लडने़ को दण्ड बैठक लगा रही है। जो क्षेत्रीय दल और संगठन आज इनके जनक हैं। कल ये ही इनके निशाने पर होंगे, इसमें दो मत नहीं। क्योंकि एक दल दूसरे के लिए सेना तैयार कर रहा है और दूसरा पहले के लिए तैयार कर रहा है। परिणाम भी वहो भुगतेंगे किंतु विनाश राष्ट्र,राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद का होगा।

निष्कर्षतः कहां जा सकता है कि वर्तमान राजनीतिक व्यवरथा को क्षेत्रीय दल विभिन्न प्रकार से प्रभावित कर रहे ह एवं उनका महत्त्व बढ़ता जा रहा है। चुनाव सुधार के विषय में भी ये बात लागू की जा सकती है कि क्षेत्रीय दल सिर्फ विधानसभा चुनाव लड़ने के लिए ही योग्य माने जाए और राष्ट्रीय पार्टियाँ ही सांसद का चुनाव लड़े जिससे सर्वव्यापी व सर्वमान्य सोच के नेता निकल कर आए और सब बातों से उपर उठ राष्ट्रीय चिंतन के विषय पर काम किया जा सके।

♦♦♦♦♦

- **संदर्भ सूची**


- https://www.bbc.com/hindi/india-51153224
- https://hindpedia.com/regional-political-parties/
- https://www.orfonline.org/hindi/research/%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%B7%E0%A5%87%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%80%E0%A4%AF-%E0%A4%A6%E0%A4%B2-%E0%A4%94%E0%A4%B0-%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A5%80%E0%A4%AF/
- https://hindiraj.com/bharat-me-kitni-political-party-hai/
- https://www.pravakta.com/the-role-of-regional-political-parties-in-india/

# 6

# राष्ट्रीय राजनीति में भाजपा की लोकप्रियता एवं क्षेत्रीय दलों के वर्चस्व का पतन

**काजल**

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

2019 के राष्ट्रीय चुनाव में व्यापक प्रदर्शन के पश्चात, एक प्रमुख दल के रूप में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने भारत के नए भाग में स्वयं को स्थापित करना शुरू कर दिया है और भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों के एकमात्र प्रमुख होने के मानक आख्यान को चुनौती दी है। 2014 में भाजपा ने 543 में से 282 सीटें जीती थीं, 2019 में यह संख्या बढ़कर 303 सीटों पर पहुंच गई। लगातार चुनावों में, भाजपा ने सरकार में बहुमत प्राप्त किया है, अपनी शक्ति को मजबूत करने के लिए जनादेश के साथ, 1971 के पश्चात पहली बार ऐसा हुआ है। भाजपा ने न केवल चुनावी दृष्टि से अपितु सांस्कृतिक दृष्टि से भी पूरे भारत में अपने पदचिह्न का विस्तार करने का प्रयास किया है। क्या अपने पारंपरिक क्षेत्रीय आधारों से परे भाजपा का विस्तार भारत में क्षेत्रीय दलों के लिए चुनौती दर्शाता है? यह लेख इस चर्चा के मूल्यांकन का आधार है।

सर्वप्रथम, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि कई वर्षों से, 'क्षेत्रीय दलों' ने एक महत्वपूर्ण वोट शेयर प्राप्त किया है। 1984 में भी, कांग्रेस के चुनावी प्रभुत्व के दौरान, कांग्रेस और भाजपा के अतिरिक्त अन्य दलों को जाने वाले राष्ट्रीय वोट का भाग 40þ से ऊपर था। जब हम भारत में क्षेत्रीय दलों की सापेक्ष शक्ति की कल्पना करते हैं, तो यह केवल वोट शेयर के बारे में नहीं है, क्योंकि जब एक राष्ट्रीय पार्टी का वर्चस्व होता है उस अवधि में भी क्षेत्रीय दल महत्वपूर्ण वोट शेयर प्राप्त करते हैं। बल्कि यह लेख क्षेत्रीय दलों की राष्ट्रीय दलों की तुलना में सौदेबाजी की क्षमता और देश में शासन को प्रभावित करने की क्षमता के बारे में है।

कुल मिलकर  यह तर्क दिए जा रहे हैं कि भाजपा के चुनावी प्रदर्शन और नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता ने क्षेत्रीय दलों की सौदेबाजी की स्थिति को कमजोर कर दिया है। केंद्र में भाजपा की निर्विवाद शक्ति ने शासन के विषयों में सत्ता के अधिक केंद्रीकरण की अनुमति दी है। केंद्रीकरण भाजपा की 'आधिपत्य' परियोजना के केंद्र में है। जिस कारण क्षेत्रीय और राष्ट्रीय राजनीति के मध्य अधिक अंतर उत्पन्न हुआ है। स्पष्ट शक्तियों और राष्ट्रीय सरकार के लिए

जिम्मेदार सरकारी योजनाओं से प्रेरित मोदी की लोकप्रियता एक राष्ट्रीय राजनीति उत्पन्न करती है जिसे मतदाता के लिए क्षेत्रीय राजनीति से सरलता से अलग किया जा सकता है। राष्ट्रीय राजनीति का यह तेजी से परिवर्तित रूप राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका को चुनावी दृष्टि से और सौदेबाजी की शक्ति दोनों में कमजोर कर रहा है।

भारतीय दलीय व्यवस्था एवं क्षेत्रीय दल

कांग्रेस पारंपरिक रूप से भारतीय दलीय व्यवस्था में प्रमुख पार्टी रही है, परंतु 1990 के दशक तक दल कमजोर होने लगा थी। उसी समय, 'राम जन्मभूमि' आंदोलन के सहयोग से, भाजपा को लोकप्रियता प्राप्त होने लगी। भाजपा ने 1998 में पहली बार अपने गठबंधन, राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के साथ सरकार बनाई, जो भारतीय दलीय व्यवस्था में परिवर्तन का संकेत देती है  जो एक चरण है, एक प्रमुख पार्टी प्रणाली से भाजपा और कांग्रेस (और सहयोगियों) के साथ एक द्विध्रुवीय प्रणाली की ओर जाना। दलीय व्यवस्था के उन्मुखीकरण में परिवर्तन के बाद भी, वोट का एक महत्वपूर्ण भाग क्षेत्रीय और स्थानीय पार्टियों को जाता रहा। वर्ष 1984 को आधार वर्ष के रूप में देखा जा सकता है, क्योंकि यह पहले राष्ट्रीय चुनाव से मेल रखता है जिसके बाद भाजपा एक पूर्ण पार्टी बन गई। भारतीय राजनीति में भाजपा की लोकप्रियता 1990 के दशक के मध्य से दिसंबर 1992 में हिंदू कट्टरपंथी समूहों द्वारा बाबरी मस्जिद के विध्वंस के बाद से बढ़ने लगती है। परंतु इसके पश्चात भी, क्षेत्रीय दलों को वोट शेयर की सरासर स्थिरता ध्यान देने योग्य है। 1984 और 2014 के बीच, क्षेत्रीय दलों ने 43 प्रतिशत से 52 प्रतिशत वोट शेयर प्राप्त किया है। इन मानकों के अनुसार, 2014 का राष्टोय चुनाव, जिसमें भाजपा सत्ता में आई थी, उल्लेखनीय नहों है, क्योंकि क्षेत्रीय दलों ने वोट शेयर का 49 प्रतिशत  प्राप्त किया था। 2014 के राष्टोय चुनाव में प्रमुख परिवर्तन यह है कि भाजपा ने कांग्रेस का वोट शेयर भी प्राप्त किया है।

लेकिन 2019 में स्थिति बदल गईं, क्षेत्रीय दलों का वोट शेयर गिरकर 44 प्रतिशत हो गया। इसमें से अधिकांश ओडिसा, तेलंगाना और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में भाजपा की पैठ बनाने की क्षमता के कारण था, जहां कम से कम एक दशक से क्षेत्रीय दलों के नेताओं का वर्चस्व रहा है। दो वर्णनात्मक तथ्य ध्यान देने योग्य हैं। सबसे पहले, 40 प्रतिशत से अधिक वोट शेयर पर, क्षेत्रीय दलों को अभी भी भारतीय मतदाताओं से समर्थन का एक बड़ा भाग प्राप्त होता है। दूसरा तथ्य यह है कि 37 प्रतिशत वोट शेयर और 300 से अधिक सीटों (543 में से) के साथ, भाजपा

भारतीय दलीय प्रणाली में एकमात्र प्रमुख पार्टी है, जिसे कुछ विद्वानों ने 'चौथी पार्टी प्रणाली' की संज्ञा दी है।

2014 के पश्चात क्षेत्रीय दलों की सौदेबाजी की क्षमता

2014 के राष्ट्रीय चुनवों के पश्चात भले ही क्षेत्रीय दलों का वोट शेयर पर्याप्त हों, परंतु क्षेत्रीय दलों की स्थिति मूल रूप से एक दशक पहले की स्थिति से कमजोर है। पहले मतदाता राष्ट्रीय चुनाव में कांग्रेस या भाजपा के विरुद्ध किसी एक क्षेत्रीय दल को वोट देने का चुनाव कर रहा था। क्योंकि क्षेत्रीय दल राज्य के भीतर शक्तिशाली रहे है, परंतु उनके पास किसी भी गवर्निंग गठबंधन का महत्वपूर्ण भाग बनाने का कोई अवसर नहीं रहा है। इसके अतिरिक्त, यह दल समय–समय पर कांग्रेस या भाजपा की राष्ट्रीय नीतियों का विरोध कर तो करते रहे हैं, परंतु यह ऐसे दल नहीं हैं जिनके पास उचित प्रकार से गठित या विश्वसनीय राष्ट्रीय एजेंडा है। जिस कारण यह दल काभी राष्ट्रीय राजनीति में एक मात्र प्रमुख विकल्प बनकर नहीं आए हैं।

2018 के उत्तरार्ध में, देश के विभिन्न भागों से क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के एक समूह ने स्वयं को केंद्र–मंच पर पहुँचाने के लिए और भाजपा को दिए गए स्थान को प्राप्त करने के लिए दलों का एकत्रीकरण प्रारंभ किया। जिसमे मुख्यतः पांच नेता, तेलंगाना से के. चंद्रशेखर राव (तेलंगाना राष्ट्र समिति), आंध्र प्रदेश से चंद्रबाबू नायडू (तेलुगु देशम पार्टी), पश्चिम बंगाल से ममता बनर्जी (अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस) और मायावती (बहुजन समाज पार्टी) और अखिलेश यादव (समाजवादी पार्टी) दोनों हैं।  इन प्रयासों में सबसे आगे रहे थे। एक दूसरे के साथ राज्य में अच्छे संबंध न होने के बाद भी स्वयं को 2019 राष्ट्रीय चुनावों में केंद्र में प्रमुख खिलाड़ियों के रूप में लाने के लिए यह दल एकत्रित हुए। जो प्रयास असफल रहा और भाजपा स्वयं के पूर्ण बहुमत से विजयी हुई।

राष्ट्रीय और राज्य चुनावों में मतदाता की भूमिका

एक दृष्टिकोण यह है कि मतदाता तर्कहीन होते हैं और उपरोक्त कारकों को सरलता से अलग नहीं कर सकते हैं और केवल क्षेत्रीय दलों को बिना सोचे–समझे वोट देते हैं। फिर भी, कई राज्यों में वर्तमान के चुनाव इस तथ्य की पुष्टि हुई हैं कि मतदाता आज राज्य और राष्ट्रीय चुनावों के बीच स्पष्ट अंतर करते हैं। इससे पता चलता है कि मतदाता तर्कसंगत हैं – कम से कम इस अर्थ में कि वे राज्य और राष्ट्रीय चुनावों में अपने प्रोत्साहन को अलग प्रकार से देखते हैं। परंतु, ऐतिहासिक रूप से, राज्य के चुनाव राष्ट्रीय चुनाव परिणामों की अत्यधिक भविष्यवाणी

करते रहे हैं। भारतीय राजनीति में इस संरचनात्मक बदलाव की क्या व्याख्या है अर्थात्, राज्य और राष्ट्रीय चुनावों के बीच मतदान व्यवहार में स्पष्ट अंतर –और यह क्षेत्रीय दलों की स्थिति को कैसे प्रभावित करता है? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए क्षेत्रीय दलों की संरचना और अपील का विश्लेषण करना उपयोगी होगा।

हालांकि क्षेत्रीय दलों को 'सामाजिक आंदोलनों से तैयार किए गए ग्राउंड–अप संगठनों' के रूप में देखने के लिए आकर्षक है। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) या तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) जैसे कुछ प्रमुख क्षेत्रीय अभिनेताओं ने स्पष्ट रूप से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी) पार्टी से समबंध तोड़ लिए है। अन्य दल जैसे बीजू जनता दल (बीजद), समाजवादी पार्टी (सपा), जनता दल (यूनाइटेड) (जद (यू), या जनता दल (सेक्युलर) (जेडी (एस) स्पष्ट रूप से अब समाप्त हो चुके जनता दल का हिस्सा थे। राष्ट्रीय राजनीति में जुड़ाव की यह पृष्ठभूमि क्षेत्रीय दलों के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह विश्वसनीय रूप से राष्ट्रीय क्षेत्र में बातचीत करने की उनकी क्षमता का संकेत देती है। यह क्षेत्रीय दलों के व्यवहार का एक विशिष्ट–संचालित परिप्रेक्ष्य है, जिसे एडम ज़िगफेल्ड (ज़ीगफेल्ड 2016) द्वारा सबसे प्रभावी ढंग से व्यक्त किया गया है।

हाल के दिनों में, क्षेत्रीय दलों ने एक दुर्जेय समूह (जैसा कि जनता पार्टी में) के रूप में एकजुट होने या केंद्र में समर्थन के बदले राष्ट्रीय दलों से लाभ प्राप्त करने के लिए पर्याप्त वोट शेयर का आदेश दिया है। यह 'थर्ड पार्टी सिस्टम' में मुख्य संरचनात्मक सिद्धांत है, जिसमें केंद्र में सरकार बनाने के लिए गठबंधन आवश्यक थे। राष्ट्रीय पार्टी के अभिनेताओं से लाभ लेने के लिए क्षेत्रीय दलों की क्षमता उन मतदाताओं को आकर्षित कर सकती है जिनकी अधिक क्षेत्रीय या स्थानीय राजनीतिक प्राथमिकताएँ हो सकती हैं, जिसका अर्थ है कि वे राष्ट्रीय कल्याण के विपरीत राज्य कल्याण पर अधिक भार डालते हैं। क्षेत्रीय राजनीतिक अभिनेताओं की अक्सर क्षेत्रीय अपील, पार्टी संगठन और संरक्षण के संयोजन के माध्यम से स्थानीय मतदाताओं पर पकड़ होती है। महत्वपूर्ण रूप से, राष्ट्रीय दलों (विशेष रूप से इंदिरा गांधी के समय में कांग्रेस पार्टी) के केंद्रीकरण की प्रकृति को देखते हुए, क्षेत्रीय दल क्षेत्रीय जातीय / जाति आधारित पहचान के दावों के प्रति उत्तरदायी होने के लिए बेहतर स्थिति में उभरे। एक गठबंधन प्रणाली में, मतदाता के लिए राष्ट्रीय चुनाव में क्षेत्रीय पार्टी का समर्थन करना जारी रखने के लिए थोड़ा नकारात्मक है, क्योंकि वह पार्टी केंद्र में सत्तारूढ़ गठबंधन का हिस्सा हो सकती है और राज्य की ओर से बातचीत कर सकती है।

मतदाता प्रोत्साहन के संदर्भ में स्प्लिट टिकट सिद्धांत

राजनीतिक वैज्ञानिकों के लिए, राज्य और राष्ट्रीय चुनावों में विभिन्न दलों के लिए मतदान की घटना को 'स्प्लिट टिकट वोटिंग' कहा जाता है। जैसा कि हाल के चुनावों ने हमें दिखाया है, भारत में मतदाता टिकटों को विभाजित करने में काफी सक्षम हैं। एक स्वाभाविक प्रश्न यह है कि विभाजित टिकट मतदान कब होगा, जैसे कि मतदाता राष्ट्रीय चुनावों में एक राष्ट्रीय दल का समर्थन करते हैं, परंतु दूसरा दल, राज्य के चुनावों में अक्सर एक क्षेत्रीय दल ही होता है। इस प्रकार विभाजित टिकट मतदान का प्रश्न राष्ट्रीय स्तर पर क्षेत्रीय दलों को वरीयता देने वाले प्रश्न की तुलना में अधिक सामान्य प्रश्न है, क्योंकि विभाजित टिकट मतदाता दो अलग–अलग स्तरों पर दो अलग–अलग राष्ट्रीय दलों का समर्थन कर सकता है। जैसकि यदि हम 2014 या 2019 के आम चुनावों को देखें तो राष्ट्रीय स्तर पर मोदी के नाम से सभी राज्यों के मतदाताओं ने अपने वोट दिए वही क्षेत्रों में कहीं न कहीं भाजपा द्वारा पूर्ण रूप से वर्चस्व दिखाई नहीं दिया है। हालांकि, यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि यदि विभाजित–टिकट मतदान का प्रचलन बढ़ता है और राष्ट्रीय चुनावों में राष्ट्रीय दलों को लाभ होता है, तो राष्ट्रीय चुनावों में क्षेत्रीय दलों को मिलने वाले वोटों का अनुपात कम हो जाएगा। इस प्रकार, ये दोनों घटनाएं घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं।

कुल मिलकर 2014 के बाद नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता के कारण भारत में क्षेत्रीय दलों का वर्चस्व राष्ट्रीय चुनावों में बहुत ही काम हो चुका है जबकि राज्य के चुनावों में कांग्रेस और भाजपा दोनों को ही क्षेत्रीय दलों की आवश्यकता है। राज्यों में कहीं न कहीं मतदाताओं का जुड़ाव क्षेत्रीय दलों के साथ अधिक है परंतु बहुत से राज्यों में जैसेकि उत्तर प्रदेश जहाँ भाजपा की सरकार है जबकि जाति व वर्ग के आधार पर उत्तर प्रदेश में बहुत–ही विविधता है। वहीं बंगाल चुनावों में भारतीय जनता पार्टी की हार हुई है परंतु सीटें पहले से बढ़ी है। आने वाले वर्षों में राज्यों के चुनावों में भी स्पष्टता दिखाई देगी क्योंकि बहुत से नए राज्यों में भाजपा ने अपनी सीमा का विस्तार किया है और जहाँ उसे विजय प्राप्त नहीं हुई वहाँ वोट शेयर में बढ़ोतरी देखी गई है।

♦♦♦♦♦

## ▪ संदर्भ सूची


- Campbell, Angus, and Warren E. Miller. 1957. “The Motivational Basis of Straight and Split-Ticket Voting.” American Political Science Review 51 (2): 293–312.
- Chibber, Pradeep, and Rahul Verma. 2019. “The Rise of the Second Dominant Party System in India: BJP’s New Social Coalition in 2019.” Studies in Indian Politics 7 (2): 131–148.
- Sircar, Neelanjan. 2019. “BJP’s Hegemony and Party Structure Spark Concerns. But Its Power is Fragile.” Hindustan Times, December 26. Accessed August 7, 2021. https://www.hindustantimes.com/analysis/bjp-s-hegemony-and-partystructure-spark-concerns-but-its-power-is-fragile/story-A4fIUXrJeDF2gLWdwDHuJI.html.
- Yadav, Yogendra. 1999. “Electoral Politics in the Time of Change: India’s Third Electoral System, 1989–99.” Economic and Political Weekly 34 (34/35): 2393.
- Ziegfeld, Adam. 2016. Why Regional Parties?: Clientelism, Elites, and the Indian Party System. Cambridge: Cambridge University Press.

डी.सी.आर.सी.

# विकासशील राज्य शोध केन्द्र


अकादमिक अनुसंधान केन्द्र भवन

गुरू तेग बहादुर मार्ग

दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली-110007

www.dcrc.du.ac.in office@dcrc.du.ac.in @dcrcofficial +91-11-27666281